नवम्बर 2021

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

जिनका निदिध्यासन करे, उसी रूप हो जाता है। दादा का निदिध्यासन निरंतर रहना चाहिए।
आँखें मींचने पर दादा दिखाई दे तो कुसंग छूएगा ही नहीं न!

राजकोट : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 16 से 22 सितम्बर 2021

सूरत : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 27 सितम्बर से 3 अक्तूबर 2021

दुबई : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 11 अक्तूबर 2021

वर्ष : 17 अंक : 1
अखंड क्रमांक : 193
नवम्बर 2021
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2021
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 650 रुपये
यू.एस.ए. : 60 डॉलर
यू.के. : 45 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

'दादा' का निदिध्यासन, वही रूप बनाए खुद को

संपादकीय

प्रस्तुत अंक में, 'अक्रम विज्ञानी' परम पूज्य 'दादा भगवान' (दादाश्री) पुरुषार्थ के हेतु से, महात्माओं को श्रवण-मनन-निदिध्यासन और उसके परिणाम स्वरूप साक्षात्कार के स्टेप्स बता रहे हैं। श्रवण अर्थात् अध्यात्म संबंधी सुनना, मनन अर्थात् उस पर साररूपी विचार करना और जितना मनन होता है फिर उसका निदिध्यासन होता है अर्थात् उस रूप हो जाता है। दादाश्री ज्ञानविधि के बाद हमेशा बताते थे, कि 'रात को सोते समय आँखें बंद करने पर दादा का फोटो दिखाई दें, उस तरह से उन्हें याद करके, कान में सुनाई दे, इतनी धीमी आवाज़ में 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा बोलते-बोलते दादा का निदिध्यासन करना चाहिए।'

दादा का स्थूल देह दिखाई दे, फोटो में दादा दिखाई दें, वे सब स्थूल निदिध्यासन हैं। सूक्ष्म में, ज्ञानी के मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार का निदिध्यासन, आगे सूक्ष्म में पाँच आज्ञा का निदिध्यासन। उससे आगे सूक्ष्मतर में निदिध्यासन यानी कि शरीर को बाकी करके, दादा परमात्मा स्वरूप दिखाई देने चाहिए। उनके अनंत गुण जैसे कि ज्ञान, दर्शन, शक्ति और सुख, वे सब दिखाई दें। फिर उनके ज्ञायक पद का निदिध्यासन और अंत में सूक्ष्मतम निदिध्यासन अर्थात् दादा केवलज्ञान स्वरूप दिखाई देने चाहिए। ऐसा नियम है कि जिनका निदिध्यासन करें, उनकी शक्तियाँ सीधी खुद में प्रकट होती हैं।

दादा की दशा, संपूर्ण, प्योरिटी और ट्रान्सपेरेन्सी वाली होने से, कुदरती रूप से ही उनके प्रति लोगों को आकर्षण होता है। उनका निदिध्यासन सहज ही होता है। महात्माओं को दादा का निदिध्यासन अलग-अलग प्रकार से होता था। जैसे कि, दादा इन्डिया में हों तो अमरीका में दिखाई देते थे। इससे ऐसा समझ में आता है कि पूर्ण दशा वाले ज्ञानी के लिए देवता भी उनका निदिध्यासन करने में लोगों की हेल्प करते हैं। तो कभी दादा की प्योरिटी की भावना से उनका सूक्ष्म शरीर भी लोगों को निदिध्यासन करवाता था। और कभी प्रज्ञाशक्ति केवल आत्मा रूप बरतती थी, उससे भी महात्माओं को निदिध्यासन होता था। इस प्रकार महात्माओं की चित्त शुद्धि के अनुरूप, समय व संयोग अनुसार, दादा के दर्शन निदिध्यासन के रूप में होते रहते हैं।

शुरुआत में महात्माओं को ज्ञानी के देह का निदिध्यासन रहेगा, फिर जैसे-जैसे खुद की दशा बदलती जाएगी वैसे-वैसे ज्ञान का निदिध्यासन रहेगा, दादा की आंतरिक परिणति का निदिध्यासन रहेगा। जैसे-जैसे महात्माओं का परिचय बढ़ेगा वैसे-वैसे आवरण टूटने पर जितनी पहचान होती जाएगी उतना दादा का निदिध्यासन होगा। अंत में, दादा के साथ अभेदता ही पूर्ण निदिध्यासन है! जिसे ऐसा निदिध्यासन रहेगा, उसे कोई अड़चन नहीं आएगी। जबकि स्थूल उपस्थिति ढूँढेगा तो अड़चन आएगी।

जब तक आत्मा का स्पष्टवेदन नहीं है तब तक ज्ञानी पुरुष का निदिध्यासन ही स्पष्टवेदन है। अब, पुरुषार्थ के रूप में स्थूल, सूक्ष्म, सूक्ष्मतर, सूक्ष्मतम निदिध्यासन तो सिर्फ ज्ञानी पुरुष का ही करने जैसा है, जो महात्माओं को सहज ही वीतराग बना देगा।

- जय सच्चिदानंद

'दादा' का निदिध्यासन, वही रूप बनाए खुद को

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

श्रवण-मनन-निदिध्यासन-साक्षात्कार

प्रश्नकर्ता : वेदांत में श्रवण-मनन और निदिध्यासन, इन तीन शब्दों का उपयोग करते हैं। फिर आपने जो बताया है, वह साक्षात्कार आज इसमें चौथा जुड़ा। तो श्रवण-मनन-निदिध्यासन और चौथा साक्षात्कार किसे कहते हैं?

दादाश्री : श्रवण अर्थात् अध्यात्म संबंधी सुनना। अध्यात्म सुनना, उसे श्रवण कहते हैं।

श्रवण अर्थात् हमारे मुँह से यह जो कुछ भी सुनते हैं, वह सब श्रवण कहलाता है। और क्रमिक मार्ग के ज्ञानियों के मुँह से सुनते हैं, उसे भी श्रवण कहते हैं।

मनन अर्थात् उस पर विचार करना। जितना मनन करेगा उतना निदिध्यासन होगा। और निदिध्यासन अर्थात् उस रूप होते रहना। जो बोले हैं, जैसा सुना है वैसा ही हो जाना। और जितना निदिध्यासन होगा उतना साक्षात्कार होगा। अर्थात् वह पढ़ा हुआ जो ज्ञान साक्षात् होने के लिए है। तब हमें उसका मूल स्वरूप प्राप्त होगा।

यह सब श्रवण किया। श्रवण अर्थात् आपने पढ़ा या सुना किसी भी तरह से, व्याख्यान में जाकर सुना लेकिन उन सब के फलस्वरूप में यदि मनन ना होता हो, मनन शुरु न हो पाए तो फिर वह श्रवण किया हुआ व्यर्थ है। और मनन के फलस्वरूप यदि निदिध्यासन ना होता हो तो वह व्यर्थ है। निदिध्यासन के फलस्वरूप साक्षात्कार होना चाहिए।

दादा सिखाते हैं ज्ञान का प्रमाण (अनुपात)

प्रश्नकर्ता : अभी ऐसा हुआ कि तबीयत ठीक नहीं थी। इसलिए डॉक्टर ने कहा कि, '2-3 वीक (सप्ताह) बाहर नहीं जाना।' तो सोचा कि हाँ, अच्छा मौका मिला। अब एक से लेकर अंत तक की सभी आप्तवाणियाँ पढ़ लूँगा। तो वहाँ दादा का निदिध्यासन हुआ। फिर दादा ने कहा, कि 'अरे, यह क्या पढ़ता रहता है?' तो उस दिन से सब पढ़ना छोड़ दिया है। तो अब मुझे यह पूछना है कि मुझे पढ़ना है या नहीं पढ़ना है?

दादाश्री : ऐसा है, पढ़ो ज़रूर, परंतु इस वाक्य को सुन लो। बहुत पढ़ने से मनन शक्ति घटती है। बहुत मनन करने से निदिध्यासन शक्ति घटती है। बहुत निदिध्यासन, वह सबसे अंतिम है। उसके एक्सेस (ज़्यादा) का हर्ज़ नहीं है। वर्ना, तब तक झंझट है।

लोगों ने तो कृपालुदेव के पत्र पढ़-पढ़कर पूरे रट लिए हैं। अरे भाई, मनन शक्ति खत्म हो गई! सबकुछ प्रमाण में अच्छा है। ज़रूरत के मुताबिक सबकुछ चाहिए प्रमाण में। प्रमाण से बाहर तो सब गलत ही कहा जाएगा न? यदि नमक ज़्यादा डालें तो?

प्रश्नकर्ता : प्रमाण नहीं चूकना चाहिए। लेकिन जब तक साक्षात्कार नहीं होता तब तक निदिध्यासन अच्छा है न?

दादाश्री : अच्छा है न! बहुत ही अच्छा है।

निदिध्यासन जैसा कुछ भी नहीं है न! यदि माँ न हो और मौसी हो तब भी उसका काम चलेगा।

प्रश्नकर्ता : नहीं, यानी कि इनका संबंध किस तरह से है? यह वाँचन, मनन, चिंतवन, निदिध्यासन और साक्षात्कार, इनका कनेक्शन किस तरह से है?

दादाश्री : यदि इतना ही दूध हो, उसमें इतना दही डालें तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : दूध फट जाएगा।

दादाश्री : उससे तो बल्कि दही नहीं बनेगा। इतने प्रमाण में डालना पड़ेगा। यदि वह नोबल हो और ज़्यादा डाल दे तो? कहेगा, इसका स्वभाव नोबल है, मन बड़ा है। दही ज़्यादा डाल देने से क्या होगा?

यह बिलोना बिलोते हैं न, दही में से मक्खन निकालने के लिए, उसे भी ज़्यादा बिलोएँ तो बल्कि मक्खन चला जाता है। जो आया हुआ होता है वह भी चला जाता है। तो फिर क्या करना पड़ता है, वापस? गरम पानी डालते हैं तब फिर वापस आता है, दोबारा। उपाय करने पड़ते हैं न! वर्ना, जो आया हुआ होता है वह भी चला जाता है। ऐसा सब प्रमाण से ज़्यादा करने पर तो सारा नुकसान ही है।

प्रश्नकर्ता : क्या ऐसा है दादा, कि बहुत निदिध्यासन करने से साक्षात्कार रुक जाता है?

दादाश्री : नहीं।

प्रश्नकर्ता : रुकता नहीं, तो होता है?

दादाश्री : होता है न! निदिध्यासन का फल ही यह है। यह साक्षात्कार हो तभी निदिध्यासन जारी रहता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन निदिध्यासन वही साक्षात्कार नहीं है?

दादाश्री : वही साक्षात्कार है।

प्रश्नकर्ता : वह जो निदिध्यासन है, वह किस (चीज़) का साक्षात्कार है? खुद के आत्मा का या...

दादाश्री : आत्मा, मूल आत्मा ही न!

खुद ने अपने 'सेल्फ' का 'रियलाइज़' किया, वह है साक्षात्कार! यह पूरा विज्ञान ही है, अविरोधाभासी विज्ञान है। और विज्ञान की भूमिका क्या है? आपके सर्व पाप भस्मीभूत कर डालता है। उसके बिना तो आप साक्षात्कार प्राप्त कर ही नहीं सकते और साक्षात्कार प्राप्त किए बिना मोक्ष में नहीं जा सकते और वह साक्षात्कार योग निरंतर रहना चाहिए। एक क्षण भी साक्षात्कार योग नहीं बदले, अपने आप ही रहा करे, आपको याद नहीं करना पड़े। जब दृष्टि द्रष्टा में आए, ज्ञान ज्ञाता में आए, तब साक्षात्कार होता है।

(और बाहर अज्ञानता में) सच्चे भक्त होना हो तो शुरुआत में यदि भगवान याद नहीं रहते हों तो बाहर जहाँ मंदिर दिखाई दे, वहाँ भगवान के दर्शन करना। फिर ऐसा करते-करते जब भगवान याद रहने लगे, तब फिर भीतर वाले आत्मा को ही भगवान मानोगे तो सच्चे भक्त बन जाओगे। और जब आपका आत्मा साक्षात्कार देगा तब आप भगवान बन गए होंगे!

...साररूपी निदिध्यासन

जो श्रवण किया है न, उसके साररूप का मनन होना चाहिए और उसके साररूप निदिध्यासन होना चाहिए। उसके साररूप, उस सार का, परमार्थ

का साक्षात्कार होता है। फिर ज्ञानी मिलें न तो बात, वह वस्तु ही अलग है। वह निदिध्यासन मिले तो वही रूप कर देता है। लेकिन तब तक यह (निदिध्यासन) हमें आगे ले जाकर तो बैठा देता है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। लेकिन फिर अलग होना चाहिए न! फिर अलग करने वाला कोई चाहिए न?

दादाश्री : हाँ! चाहिए, चाहिए। फिर वह अंतिम!

प्रश्नकर्ता : दादा, वह शब्द कान में सुनाई देता है, तो मनन करते समय प्रश्न खड़ा होता है। फिर उस प्रश्न के खुलासे के लिए ज्ञानी चाहिए ही?

दादाश्री : चाहिए ही। लेकिन वे तो मिल जाते हैं। जो इतना पुरुषार्थी होता है न, उसे मिल जाते हैं।

निदिध्यासन के लिए स्टेप्स

प्रश्नकर्ता : निदिध्यासन, साक्षात्कार होने के लिए और गढ़ाई के लिए सीढ़ी के बारे में जानकारी दीजिए!

दादाश्री : यहाँ हमारे पास आकर बैठोगे न, तो उस रूप होते जाओगे। जिनका निदिध्यासन करें न, उस रूप सीधी-डायरेक्ट शक्तियाँ हमें प्राप्त होती हैं, साथ बैठने से ही। वह वातावरण बहुत अलग प्रकार का होता है! वातावरण का असर होता है या नहीं?

अब, यह अक्रम विज्ञान है इसलिए आपके लिए ये स्टेपिंग नहीं लिए। आपको पहले साक्षात्कार कराया। अब स्टेपिंग देख लेना। आपके लिए तो जब देखो तब दादा हाज़िर ही रहते हैं। अब, ये दादा यहाँ नहीं हों तब आपको क्या करना है? तब कहते हैं, निदिध्यासन से काम लेना है। इस तरह से आँखें बंद करने पर आपको दिखाई दें। श्रवण, मनन तो सब हो चुका है, होता ही रहता है न!

प्रश्नकर्ता : निदिध्यासन के स्टेपिंग में ऊपर आपने बताया था कि देख लेना तो उसके बारे में जानकारी चाहिए।

दादाश्री : अब उसके स्टेप्स कैसे हैं? जैसे कॉलेज में फर्स्ट यिअर में जाते हैं, तो पहले सुनना पड़ता है। लोग बताते हैं, कि दादा ऐसे हैं वैसे हैं, तो सब से पहले सुनते हैं। यानी कि पहले कान का उपयोग होता है।

फिर पक्का होता है कि मुझे दर्शन करने जाना है। और दर्शन करके यदि वापस चला जाए तो वह व्यर्थ है। और यदि मनन में लग जाए, उसके विचार करने में ही लग जाए तो फिर श्रवण में से मनन होता है। वह सेकन्ड यिअर में गया। फर्स्ट यिअर में से सेकन्ड यिअर में आया। पहले श्रवण होता है, फिर उस चीज़ का मनन होता है। श्रवण हुए बगैर मनन किसका करें? श्रवण से हम आगे (मनन में) जाते हैं। तो यह सेकन्ड यिअर हुआ न? और मनन में से निदिध्यासन में जाते हैं, अंतिम साल में। और निदिध्यासन से ऊपर है साक्षात्कार।

श्रवण, मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार। ये दादा तो साक्षात् ही हैं। उन साक्षात् वालों का (क्रमिक मार्ग में) कैसा होता है? सिर्फ, एक सेकन्ड के लिए ही, झलक दे जाएँ, उतना ही। वे लोग तो उसे ऐसा मानते हैं कि पूर्ण साक्षात्कार हो गया!

गलत निदिध्यासन तो वैसा असर

पूरा जगत् साक्षात्कार करने के लिए अनंतकाल से निदिध्यासन करता ही रहा है। भाई, तू गलत निदिध्यासन कर रहा है, उससे गलत साक्षात्कार होता है। जैसा आप निदिध्यासन करोगे उसका तुरंत ही साक्षात्कार होगा। यह चंदू सहज ही बोले, कि बहुत निर्बलता आ गई है तो निर्बलता का साक्षात्कार तुरंत ही होगा और निर्बल हो जाएगा। अरे, निर्बलता आती है तो चंदू को आती है, हमें क्या?

'मेरा घर जल गया', बोला न, तो आ ही बना, फिर भले ही वे ज्ञानी हों। निदिध्यासन किया तो भारी फल आएगा। घर भले ही जले, हमें तो बुझाना है। जलने लगा तो भी व्यवस्थित, और बुझ सका तो भी व्यवस्थित, नहीं बुझ पाए तो भी व्यवस्थित। ज्ञानियों को तो कुछ भी असर ही नहीं होता।

'यह काम मुझसे नहीं होगा', ऐसा कभी भी नहीं बोलना चाहिए। बहुत जागृतिपूर्वक बोलना चाहिए। वर्ना, उस निदिध्यासन का फल तुरंत ही मिलेगा। और यदि उस तरह का काम आए तो ऐसा कहना, कि 'यह काम चंदूभाई से नहीं होगा।' अब आपको तो यह ज्ञान दिया है, अत: आत्मा का निदिध्यासन करना।

कुसंग के निदिध्यासन से बनती है विषय की ग्रंथि

निदिध्यासन यानी कि 'यह स्त्री सुंदर है या यह पुरुष सुंदर है।' ऐसा सोचे, तो उतनी देर वह निदिध्यासन हो गया। सोचा कि तुरंत ही निदिध्यासन हो जाता है। फिर खुद वैसा ही बन जाता है। अत: अगर हम देखेंगे तभी झंझट होगी न? उससे अच्छा तो आँखें नीचे कर देनी चाहिए। आँखें गड़ानी ही नहीं चाहिए। पूरा जगत् फँसाव है। फँसने के बाद तो छुटकारा ही नहीं है। कितने ही जन्म खत्म हो जाएँ फिर भी उसका 'एन्ड' ही नहीं है!

जिसका निदिध्यासन करे, उसी रूप हो जाता है। कोई ग्रेज्युएट हो और यदि वह खेत में जाकर बैल ही चलाए तो बैल जैसा हो जाता है, क्योंकि उसका निदिध्यासन होता है। इसलिए जिसके संग में आया और उसका निदिध्यासन हो, तो उस रूप हो जाता है।

कुछ पुरुष स्त्रियों का निदिध्यासन करते हैं, लेकिन उसे निदिध्यासन नहीं कहा जाता, ध्यान कहा जाता है। और कुछ स्त्रियाँ पुरुषों का निदिध्यासन करती हैं। इसलिए सभी पुरुष स्त्रियाँ बन जाते हैं और स्त्रियाँ पुरुष बन जाती हैं। इसलिए ना दही में रहे और ना दूध में, दोनों बिगड़े।

स्त्री या विषय में रमणता की जाए, ध्यान किया जाए, निदिध्यासन किया जाए तो वह गाँठ पड़ जाती है, विषय की।

कुसंग का असर नहीं होता दादा के निदिध्यासन से

प्रश्नकर्ता : ऑफिस में सभी जगह कुसंग बहुत है। वहाँ सब ऐसी विषय की और ऐसी ही बातें चलती रहती हैं इसलिए उसी की रमणता चलती रहती है।

दादाश्री : यह जगत् अभी कुसंग स्वरूप ही है। इसलिए किसी के साथ खड़े रहने जैसा नहीं है, कहीं भी।

प्रश्नकर्ता : ऐसा होता है, कि कब छूटेगा यह।

दादाश्री : या तो अकेले बैठे रहना या फिर यहाँ आकर सत्संग में पड़े रहना, कभी भी। कुसंग में खड़े रहने जैसा नहीं है। ऑफिस में कुसंग मिल जाता है, नहीं?

निरा कुसंग का ही वातावरण है। अत: यदि कुसंग में डूब जाएगा तो ज़रा मार खा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अब वह चाहिए ही नहीं न, कुसंग ही नहीं चाहिए अब।

दादाश्री : वह नहीं चाहिए, लेकिन यहाँ कोई व्यक्ति ऐसे कुसंग में आ जाए न तो गिर जाएगा। अत: कुसंग से दूर ही रहना ऐसा हमारा कहने का भावार्थ है। बाकी, इसमें कोई नाम नहीं दे सकता, ऐसा यह जगत् है। अभी यह जो आयोजन करते हो न, उसमें इतना ही सावधान रहना है। बाकी सब व्यवस्थित में है, जहाँ चिंता करने का कोई स्थान नहीं है।

कुसंग मिल जाए तो फिर कभी झंझट हो जाएगी। ऐसे में भी कुछ समय के लिए यदि सत्संग की अधिक पुष्टि मिल जाए तो कुसंग का असर जा भी सकता है। कभी उसका जोखिम भी रहता है। हमेशा अपवाद तो होते ही हैं न! इसलिए कुसंग से दूर रहना।

प्रश्नकर्ता : कुसंग तो चाहिए ही नहीं अब।

दादाश्री : लेकिन फिर भी जितना हो सके उतना, अधिक से अधिक सत्संगियों के साथ पड़े रहना। चाहे गालियाँ दें फिर भी उनके पास ही पड़े रहना अच्छा। सत्संगियों के वहाँ गालियाँ दें तब भी हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा आज कल, यह थ्री विज़न अच्छा रहता है।

दादाश्री : थ्री विज़न तो बहुत काम निकाल देता है। दादा का निदिध्यासन रहता है न? उस निदिध्यासन से सभी फल मिलते हैं। निदिध्यासन रहे तो फिर इच्छा ही नहीं होगी किसी चीज़ की। भीख ही नहीं रहेगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मुझे नौकरी का बिल्कुल भी शौक नहीं है।

दादाश्री : क्या करोगे नहीं जाओगे तो? बाहर का कुसंग छूना नहीं चाहिए, दादा का निदिध्यासन निरंतर रहना चाहिए। आँखें मींचकर दादा दिखें तो कुसंग छूएगा ही नहीं न! दादा को देखते रहना ही सब से बड़ा सत्संग है।

शक्ति प्राप्ति का उत्तम रास्ता

प्रश्नकर्ता : आपने कहा था रात को वह निदिध्यासन करना और 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा बोलते-बोलते सो जाना? तो यह निदिध्यासन और ऐसा बोलने के पीछे कौन सा साइन्टिफिक बेस (वैज्ञानिक आधार) है?

दादाश्री : जिनका निदिध्यासन करते हैं न, उनकी शक्तियाँ डायरेक्ट (सीधी) हमें प्राप्त होती हैं। निदिध्यासन से चिंतवन होता है और उनमें जो शक्तियाँ हैं, वे डायरेक्ट हमें प्राप्त होती हैं। शक्ति प्राप्त करने का अन्य कोई रास्ता नहीं है न इसलिए यह उत्तम रास्ता है। रोज़ आप साथ में रहते हो तब तो दिन भर चेहरा देखते रहने से (निदिध्यासन) होता ही है। अन्य कोई रास्ता नहीं है न इसलिए यह रास्ता ढूँढ़ निकाला है। तुम्हें रहेगा या नहीं रहेगा?

प्रश्नकर्ता : रहेगा।

दादाश्री : आँखें बंद करने पर दादा दिखाई देते हैं न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दिखाई देते हैं। और सुबह

दादा भगवान के असीम जय जयकार करते समय खुली आँखों से दादाजी के फोटो के सामने देखते हैं तो क्या उसे निदिध्यासन कह सकते हैं?

दादाश्री : नहीं। निदिध्यासन में आँखें बंद करने पर दिखाई देते हैं। वैसा हो गया तो फिर क्या? वह तो बहुत लाभदायक है।

निदिध्यासन से मिलती है असली चैतन्य शक्ति

प्रश्नकर्ता : दादा, आपका यह जो निदिध्यासन होता है, आपके दर्शन होते हैं, वह क्या है? असली चैतन्य है वह क्या?

दादाश्री : हमारी शक्ति डायरेक्ट प्राप्त हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : क्या वह असली चैतन्य है?

दादाश्री : उनका निदिध्यासन करने से भीतर असली चैतन्य शक्ति उत्पन्न हो जाती है। भीतर इस निदिध्यासन में चैतन्य साथ में होता है इसलिए आपके भीतर ज़बरदस्त शक्ति बढ़ जाती है।

दादा भगवान को याद करने से उनके परमाणु आप में खिंच जाते हैं, याद करते ही।

प्रश्नकर्ता : और सीमंधर स्वामी?

दादाश्री : हाँ, उन्हें याद करते ही उनके प्रत्यक्ष परमाणु हम में आ जाते हैं।

निदिध्यासन में दिखाई देता है प्रतिबिंब

प्रश्नकर्ता : यह जो निदिध्यासन बताया, उसमें पूरी मूर्ति की कल्पना करनी चाहिए न? पहले तो आभास होना चाहिए न?

दादाश्री : निदिध्यासन अर्थात् बिंब दिखना चाहिए, कैसा भी। बुद्धि एक्ज़ेक्ट निदिध्यासन नहीं करवाती।

प्रश्नकर्ता : परछाईं-सी दिखती है?

दादाश्री : हाँ, परछाईं-सी दिखे, बस। पर बुद्धि एक्ज़ेक्ट नहीं दिखाती। बुद्धि एक्ज़ेक्टनेस को मिटा देती है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर उसका क्या करना चाहिए?

दादाश्री : कोई दिक्कत नहीं। परछाईं-सी दिखे तो बहुत हो गया।

प्रश्नकर्ता : निदिध्यासन में प्रतिबिंब दिखना चाहिए?

दादाश्री : तभी उनकी शक्तियाँ डायरेक्ट मिलती हैं।

फर्क , स्मरण और निदिध्यासन में

प्रश्नकर्ता : दादा, आपके स्मरण और निदिध्यासन में कुछ फर्क हैं क्या?

दादाश्री : निदिध्यासन तो मुखारविंद सहित रहता है और स्मरण मुखारविंद के बिना रह सकता है। मुखारविंद सहित निदिध्यासन बहुत काम निकाल लेता है। 'दादा' 'एक्ज़ेक्ट' नहीं दिखें, उसमें हर्ज नहीं है। आँखें नहीं दिखें तब भी हर्ज नहीं है, परंतु मूर्ति दिखनी चाहिए। जिनका निदिध्यासन करें, उस रूप हो जाते हैं। 'दादा' खुद स्वभाव के कर्ता हैं। दादा 'एक्ज़ेक्ट' दिखें, तो उस स्वरूप हो पाएँगे, आप भी स्वभाव के कर्ता बन जाएँगे! दादा का स्मरण रहे तब भी अच्छा और निदिध्यासन रहे तब भी अच्छा है।

प्रश्नकर्ता : सतत निदिध्यासन नहीं रहता।

दादाश्री : दादा के स्मरण में मन की चंचलता रहती है, चित्त की भी चंचलता होती है और निदिध्यासन में चंचलता नहीं रहती।

निदिध्यासन में चित्त को वहाँ पर रहना पड़ता है। चित्त हाज़िर हो तब तक ही काम चलता है। मन की चंचलता का हर्ज नहीं है, परंतु चित्त को वहाँ पर हाज़िर रहना ही पड़ता है और जहाँ चित्त हाज़िर रहे, वहाँ मन को बैठे रहना पड़ता है। फिर भी पूरा दिन दादा का स्मरण रहे तो बहुत हो गया। परंतु साथ-साथ थोड़ा निदिध्यासन रहे तो अच्छा।

'हमारा' चित्त बिल्कुल भी इधर-उधर नहीं होता। जहाँ है वहीं पर सब रखो। राजा भी वहीं पर और सेना भी वहीं पर! हमारे साथ बैठने से आपकी सेना भी वैसी हो जाएगी! चित्त ठिकाने पर रहे तो निदिध्यासन होता है।

सूक्ष्म शरीर ज़बरदस्त काम करता है

प्रश्नकर्ता : कईं बार मानो कि बहुत ही एकाकार हो गया हो और उसे घर बैठे आपके दर्शन हो जाएँ लेकिन वे दर्शन कैसे, जैसे कि वास्तव में आप साक्षात् ही हाज़िर हो गए हों और इस तरह आपके चरणों को स्पर्श किया हो, ऐसा अनुभव होता है, तो वह क्या है?

दादाश्री : वह अनुभव है, वह तो जिसने (हमें) देखा हैं न, उसका यथार्थ अनुभव है। अभी मुझे देखने के बाद कईं महात्माओं के मन में, रात-दिन दादा दिखते ही रहते हैं। उनके साथ बातचीत भी करते हैं। कितने ही लोग तो मुझे ऐसा बताते हैं, कि आप मेरे पास आए थे! खुले आम बातचीत करने वाले भी बहुत हैं। सभी से मिलते हैं, बातचीत होती है, क्योंकि दादा का सूक्ष्म शरीर बाहर सभी जगह पर घूमता रहता है, पूरे वर्ल्ड में घूमता रहता है और उसका अनुभव सब को होता ही है।

प्रश्नकर्ता : दादा का भी वह शाश्वत संबंध चलता ही रहता है कि जैसे ही आप टेलीफोन रिसीवर उठाएँ तो मैं आपसे बातचीत करता ही हूँ, तो वह बात ठीक है न?

दादाश्री : हाँ, आज रात को मैं, आपके पास दो बार आ गया था! और कुछ लोगों को तो दर्शन भी हो जाते हैं, कुछ को नहीं भी होते। वह संयोगों पर आधारित है।

प्रश्नकर्ता : कभी हमें दिखाई दें, ऐसे दर्शन दें तो...

दादाश्री : हाँ, वैसा होगा। जैसे-जैसे हमारे साथ आपका परिचय बढ़ेगा न, वैसे-वैसे आवरण टूटते जाएँगे। आपके और मेरे बीच में जो आवरण हैं, उस कारण नहीं दिखाई देते। बाकी, ये तो ऐसे हैं कि निरंतर दिखाई दें। कितने लोगों को तो एक क्षण के लिए भी इधर-उधर नहीं होते। निरंतर दिखते ही रहते हैं।

ये रात को सो जाते हैं न, तो रात को नींद तो नहीं आती लेकिन पूरी रात दादा के साथ ही होते हैं। देखो कितने पक्के हैं? मैंने पूछा 'नींद आई थी?' तो कहते हैं 'नहीं, नींद ना आए तो भी ज़रा सा भी इधर-उधर नहीं होता।' मैंने कहा, 'तो, बहुत हो गया। इससे ज़्यादा और क्या चाहिए हमें?' जिनकी हाज़िरी है, उनका निदिध्यासन रहता है। जो प्रत्यक्ष नहीं हैं, उनका निदिध्यासन नहीं रहता। फोटो में दर्शन करने से एकाग्रता आती है।

प्रश्नकर्ता : हम घर पर आपका निदिध्यासन करते हैं, वह प्रत्यक्ष है या परोक्ष?

दादाश्री : वह प्रत्यक्ष है। जब तक हम हाज़िर हैं तब तक यह हमारा फोटो भी प्रत्यक्ष है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' का ध्यान शायद किसी को नहीं रहता हो, पर 'दादा' ही ध्यान में रहते हों

तो वे दोनों एक ही है। क्योंकि 'ज्ञानी पुरुष', वे ही आपका आत्मा हैं।

प्रश्नकर्ता : आज ही आपके प्रत्यक्ष दर्शन किए। लेकिन बीमारी में आपका साहित्य पढ़ा था, तब आपकी आँख और मस्तक के दर्शन हुए, वह क्या है?

दादाश्री : इन दादा के दर्शन तो राह चलते हुए भी हो जाते हैं। वे तो बात भी करते हैं अपने साथ। आपका भाव हो तो वे बातें भी करते हैं। आपसे बातें करते हैं, आपको सुनाई देता है। सबकुछ करते हैं।

प्रश्नकर्ता : इन्होंने तो आपको पहले कभी नहीं देखा था।

दादाश्री : हाँ, फिर भी उन्हें दिखाई देते हैं। कईं लोगों ने नहीं देखा हो फिर भी उन्हें दादा दिखाई देते हैं। वहाँ दर्शन होने के बाद वे मुझसे आकर कहते हैं कि, 'मुझे आप दिखाई दिए थे, मैंने जिनके दर्शन किए थे, आप वही हैं।'

प्रश्नकर्ता : ऐसा कैसे हो सकता है?

दादाश्री : यही इस काल का सब से बड़ा आश्चर्य है कि सूक्ष्म शरीर से जो बाहर घूमते हैं न, वे ही हर कहीं दर्शन देते हैं। बाहर अमरीका-मुंबई, सभी जगह घूमते हैं। रात-दिन चौबीसों घंटे, सभी जगह घूमते रहते हैं। मैं तो यहीं पर होता हूँ लेकिन वहाँ दादा दिखते रहते हैं। आपसे बातचीत भी करते हैं। अलगे दिन आकर आप मुझसे पूछो कि, 'साढ़े तीन बजे आप आए थे?' तो मुझे 'हाँ' कहना पड़ता है। आपको उलझन खड़ी न हो इसलिए 'हाँ' ही कहना पड़ता है। और फिर जिस तरह मैं बोलता हूँ, उसी तरह बोलते हैं। तब वैसा ही लगता है, वह लिख भी लेता है। वापस मुझे छोड़ने आते हैं। और फिर कहते हैं, कि 'मैं आपको छोड़ने आया था, वहाँ पर, कार के पास। इस तरह कुर्सी पकड़ी थी।'

प्रश्नकर्ता : आप यहाँ पर हो और बाहर कहीं और किसी को आपके दर्शन होते हैं, तो उस समय आप क्या अनुभव करते हैं?

दादाश्री : वह तो ऐसा है न, हमारे दर्शन होना, वह तो अलग चीज़ है और मुझे कब अनुभव होता है? जब उसका लेवल सेट हो चुका हो, तब मुझे पता चलता है कि इस आदमी ने फोन पकड़ लिया है। वर्ना, मुझे कुछ पता नहीं चलता।

प्रश्नकर्ता : वह लेवल कौन निश्चित करता है? लेवल किस तरह से निश्चित होता है?

दादाश्री : आप में उतनी कपैसिटी आ जानी चाहिए। वह कपैसिटी आ जाए न, तो लेवल सेट हो जाएगा। उसके बाद सब बातचीत होती है, एक-एक शब्द सुनाई देता है। आप इंग्लैंड में हों, तब भी सुनाई देता है। यह तो पूरा विज्ञान है!

दादा की साक्षात् हाज़िरी लगी उसका रहस्य...

और अपने यहाँ तो ऐसा भी होता है न, कि आपके जैसे पढ़े-लिखे लोग, हर प्रकार से विचारशील, वे भी आकर मुझे कहते हैं कि, 'कल दोपहर को साढ़े तीन बजे आप मेरे यहाँ आए थे और फिर साढ़े चार बजे तक मेरे यहाँ बैठे रहे। जो बातचीत की थी, वह सब मैंने नोट कर ली है। फिर आप चले गए, वह बात सच है?' मैंने कहा, 'सच है!' तो फिर मुझे 'हाँ' कहना पड़ता है जबकि मैं तो वहाँ गया ही नहीं था, दिन-दहाड़े। फिर मैंने पूछा, 'क्या कहा था, वह मुझे

बता।' वह फिर बताता है, 'यह बोले थे।' वह मेरे ही शब्द बताता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने बताया कि सूक्ष्म शरीर बाहर घूमता है, लेकिन दर्शन में तो स्थूल शरीर आता है, तो इसका रहस्य क्या है?

दादाश्री : उसे यह स्थूल शरीर दिखता है। यह बात तो मेरे भी मानने में नहीं आती। वे बातें ऐसी-ऐसी आती है, मेरे नाम से कोई देवता घूमते हैं या क्या घूमता है, वह पता ही नहीं चलता। क्योंकि देवताओं का वैक्रिय स्वभाव, जैसा देह धारण करना हो वैसा होता है। दादा के जैसा देह धारण करे, बातचीत ऐसी करे, सबकुछ करते हैं। फिर भी उसमें मैंने कुछ भी नहीं किया होता है।

यानी दिन-दहाड़े ये बातचीत करते हैं। अब, मैं जानता हूँ, कि 'मैं वहाँ पर नहीं गया था।' पर 'दादा भगवान' वहाँ जाते हैं, वह बात पक्की है!

प्रश्नकर्ता : और 'ज्ञानी पुरुष' नहीं जानते, वह भी पक्का है?

दादाश्री : मैं नहीं जानता हूँ, वह भी पक्का है और 'वे' घूमते हैं, वह भी पक्का है, वह भी मैं जानता हूँ।

और वहाँ अमरीका वाले कहते हैं न, 'आज मुझे तीन बार विधि करवाकर गए।' ऐसा कहते भी हैं वे मुझे और उनका फोन भी आता है, कि आज रात को 'दादा भगवान' आकर तीन बार उसे विधि करवा गए! इसलिए यह तो बड़ा आश्चर्य है! फिर भी उसमें नाम मात्र भी चमत्कार नहीं है।

प्रश्नकर्ता : पर हमें आश्चर्य तो होगा ही न?

दादाश्री : वह आश्चर्य लगता है, पर इसमें मैं उसे चमत्कार की तरह स्वीकार नहीं करता।

यानी कुछ है इसके पीछे, समझ में नहीं आए वैसा रहस्य है। बुद्धिगम्य रहस्य नहीं है, पर समझ में नहीं आए वैसा रहस्य है यह। पर इसे मैं चमत्कार नहीं कहने दूँगा। चमत्कार कहें तो मैं जादूगर माना जाऊँगा। और मैं क्या कोई जादूगर हूँ? मैं तो 'ज्ञानी पुरुष' हूँ। और संडास जाने की शक्ति भी मुझमें नहीं है। वे 'दादा भगवान' उनका कुछ रहस्य है, वह बात पक्की है!

बुद्धि रोकती है निदिध्यासन

प्रश्नकर्ता : दादा का या किसी का भी निदिध्यासन नहीं हो पाता, फोटो आ ही नहीं पाता। इसका क्या कारण होगा?

दादाश्री : वह तो बुद्धि है, वह दखल देने वाली बुद्धि है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या करें?

दादाश्री : कुछ नहीं। बुद्धि दखल देती है, ऐसा हम जानते हैं कि यह दखल करने वाली है। वह दखल करने वाले के कारण ऐसा दिखाई देता है। कई लोग कहते हैं कि, 'दादा, निदिध्यासन में एक्ज़ेक्ट चेहरा नहीं दिखाई देता।' मैंने कहा, 'उसमें बुद्धि दखल देती है' लेकिन आपको एक्ज़ेक्ट जैसा है वैसा ही देख लेना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि किस तरह दखल देती है?

दादाश्री : वह तो, अगर अभी निदिध्यासन कर रहे हो न, तो आपको कहीं और धकेलती रहती है।

प्रश्नकर्ता : या तो बुद्धि ऐसा कहती रहती है, कि निदिध्यासन नहीं हो पा रहा है?

दादाश्री : हाँ! बस। 'नहीं हो पा रहा है', ऐसा भी कहने लगती है। उसकी सभी दलीलें ऐसी रहती हैं, कि संसार में से मोक्ष की तरफ नहीं जाने दें! बंधन में ही रखने वाली दलीलें रहती हैं इसलिए वैसी ही दखल भी देती है।

प्रश्नकर्ता : हमें नहीं करना हो, वैसा करवाती है।

दादाश्री : हाँ, वैसा करवाती है। इसलिए निदिध्यासन नहीं हो पाता, वह बुद्धि का दखल है। जबकि लोगों को निदिध्यासन हो जाने के बाद जाता ही नहीं है, एक सेकन्ड के लिए भी नहीं जाता फिर!

प्रश्नकर्ता : एक बार हो जाने के बाद नहीं जाता, पर यह तो, निदिध्यासन नहीं हो पाता उसकी बात है।

दादाश्री : वह कब होता है, कि जब आपको अड़चन आती है तब होता है। शारीरिक अड़चनें आने पर जब आपका चित्त दुःख में रहता है, तब निदिध्यासन रहने पर ज़रा शांति रहती है। उस समय अच्छी तरह होता है। रास्ते में गाड़ी से जाते समय आँखें बंद करने पर दादाजी दिखाई देते हैं, ऐसा निदिध्यासन लोगों को हो गया होता है। फिर दुःख रहा ही नहीं न? दादाजी साक्षात् रहते हों फिर दुःख रहा ही नहीं न! आप तो कह रहे थे न कि मुझे तो दादाजी के पीछे ही लगे रहना है। इसलिए आपके लिए तो रूबरू निदिध्यासन अच्छा है।

दादा दिखाई दें, वह है निदिध्यासन

प्रश्नकर्ता : दादा दिखाई दें, वह सब निदिध्यासन ही कहलाएगा न?

दादाश्री : हाँ, दिखाई दें, वही निदिध्यासन है। आँखें बंद करने पर दादा दिखाई दें, सीमंधर स्वामी दिखाई दें, महावीर भगवान दिखाई दें।

प्रश्नकर्ता : दादा, इस तरह तो कभी नहीं दिखाई दिया। दादा भी नहीं दिखाई देते, यानी कुछ भी नहीं दिखता। आज तक कुछ भी नहीं देखा। ज्ञान से पहले भी कुछ नहीं दिखता था।

दादाश्री : ज्ञान से पहले वह कैसे दिखाई देगा? ज्ञान से पहले तो याददाश्त रहती है।

प्रश्नकर्ता : नहीं, इस ज्ञान के बाद भी कुछ दिखा ही नहीं, दादा।

दादाश्री : यह तूने बोला तो हम समझ गए। ये सभी समझ गए।

प्रश्नकर्ता : सभी समझ गए लेकिन मुझे अनुभव होना चाहिए न?

दादाश्री : वह क्या कह रहा है? उस फिल्म की तरह यों फिल्म चलती रहती है, इस तरह सब दिखता होगा। उस फिल्म को वापस कैसे लाओगे, यहाँ पर?

आज इसने खुलकर बताया न, कि मुझे दिखाई दिया, मुझे समझ में आया, कहता है। दिखाई दिए बगैर रहता ही नहीं न! देखे और जाने बगैर नहीं रह सकता न! शायद कम-ज़्यादा हो जाए।

प्रश्नकर्ता : दादा, जानने में आया, लेकिन सभी कहते हैं न, कि यह फेस (चेहरा) एक्ज़ेक्ट दिखाई दे, ऐसी सिचुएशन (परिस्थिति) पूरी दिखाई दे। उसमें फर्क कहाँ रह जाता है?

दादाश्री : नहीं, नहीं, अब ऐसा मत बोलना।

प्रश्नकर्ता-2 : हमें तो अभी आँखें बंद करने पर दादा दिखाई देते हैं।

दादाश्री : दिखाई ही देंगे न! वे तो सभी

को दिखाई देते हैं। इसे भी दिखाई देते हैं लेकिन इसे समझ नहीं है न!

प्रश्नकर्ता-2 : दादा दिखाई देते हों और पता नहीं चले, ऐसा हो सकता है?

दादाश्री : कैसे जानेगा इसे? तूने यह अभी समझा है, वही पता नहीं चलता न!

प्रश्नकर्ता-2 : यह तो, आँखें बंद करने पर किसी भी व्यक्ति को याद करें, तो उस व्यक्ति का फोटो दिखाई देता है।

दादाश्री : इसे भी दिखाई देता है। लेकिन इसने अभी कहा न, कि सभी इन्सिडेन्स (प्रसंग) इस प्रकार समझ में आ गए। तब वह जो जाना, वह किसने जाना? जानकार कौन है? जानने की वस्तु क्या है? ऐसी इसकी समझ नहीं है इसलिए इसे फिट नहीं होता। तो जानने वाला कौन है? कोई थर्ड पर्सन (तीसरा व्यक्ति) है भीतर? तब?

प्रश्नकर्ता-2 : खुद आत्मा होकर आत्मा को ही जानता है।

दादाश्री : आत्मा ही जानता है। और जानने की वस्तु को जानता है। भीतर जो इन्सिडेन्ट हुआ, वह ज्ञेय है और यह ज्ञाता है। जगत् के लोग तो परम ज्योति स्वरूप अर्थात् बाहर का प्रकाश ढूँढते हैं। अरे भाई, नहीं है यह प्रकाश-व्रकाश, वहाँ कुछ भी नहीं है। वह दुनिया ही नई लगती है!

तू किस आधार पर कह रहा है, कि दादा, आपका शरीर अभी ऐसा है लेकिन कल काले नहीं थे और आज उँगलियाँ काली हो गई हैं।

प्रश्नकर्ता-2 : वह तो, जो पहले देखा हुआ हो, वह अभी बदल जाए तब पता चलता है, कि यह बदल गया है।

दादाश्री : वही निदिध्यासन है।

अटकण के आवरण, रोकते हैं निदिध्यासन को

तुम्हें कभी निदिध्यासन रहता है? कब रहता है? शनिवार के दिन?

प्रश्नकर्ता : इस तरह स्पष्ट रूप से नहीं रहता, दादा। वह दिखाई तो देता है लेकिन बहुत कम समय के लिए दिखाई देता है। वह बहुत बार नहीं दिखाई देता।

दादाश्री : अपने हिसाब के अनुसार दिखाई देता है और कभी एकदम क्लियर दिखाई देता है और कभी क्लियर नहीं दिखता? तो फिर कभी क्यों क्लियर दिखाई देता है और फिर क्यों नहीं दिखाई देता? तब कहते हैं, भीतर वे सभी आवरण हैं। इसलिए उसे ऐसे नहीं समझना है। उसमें अपना आवरण वैसा करता है। उसका हर्ज नहीं। वह तो आपको समझना है कि भाई इतना आवरण है। लेकिन आपको वे (दादा) हाज़िर हैं न, उतना ही देखना है! तुझे तो क्लियर ही दिखाई देता है, नहीं?

प्रश्नकर्ता : दादा, परंतु अभी तक यह क्यों नहीं होता था? ये निदिध्यासन जो नहीं होता है, उसका कारण क्या है?

दादाश्री : नहीं रहता, ऐसा है ही नहीं। वह तो आपके मन में उल्टी ग्रंथि बन गई है। सभी को रहता है, अपने सभी महात्माओं को।

प्रश्नकर्ता : इस तरह सिर्फ, ग्रंथि ही बन गई है?

दादाश्री : सिर्फ, ग्रंथि ही बन गई है। बुद्धि ने ग्रंथि बना दी है। इसलिए उसे *अटकण* कहते हैं हम।

प्रश्नकर्ता : हाँ, *अटकण*। तो क्या उसके बारे में विचार करने से वह कम होने लगेगी?

यह जो *अटकण* पड़ गई है, उसके लिए अब, इस तरफ का हैन्डल मारने से वह निकल जाएगी?

दादाश्री : वह तो फिर निकल जाती है।

एक घंटा निदिध्यासन होने से काम निकल जाएगा

प्रश्नकर्ता : दादा का निदिध्यासन किस रूप में रहना चाहिए?

दादाश्री : दादा जिस स्वरूप में रहते हैं, वह लक्ष में याद रहना चाहिए। स्वरूप-बरूप का कोई हर्ज नहीं है। स्वरूप तो यदि निदिध्यासन स्वरूप रहे न, तब तो बहुत उत्तम काम निकाल देगा। लेकिन इतना अधिक नहीं रह पाता, व्यक्ति की क्षमता नहीं है। 15 मिनट रख सकता है, दस मिनट रख सकता है, आधा घंटा रख सकता है लेकिन व्यक्ति की ऐसी क्षमता नहीं है। वर्ना, काम ही निकाल देगा न! हर दिन एक घंटा निदिध्यासन के तौर पर इतना भाग दिखाई दे, तो काम ही निकल जाएगा न!

प्रश्नकर्ता : हम तो जितनी बार बात करते हैं उतनी बार दादा अच्छी तरह से ही दिखाई देते हैं, तो?

दादाश्री : वह ठीक है लेकिन उसे निदिध्यासन नहीं कहते। वह तो सहज, आपको प्रेम से ही दिखाई देते हैं। निदिध्यासन में तो पुरुषार्थ करना पड़ता है। कुछ लोग बताते हैं कि निदिध्यासन में यह आपका मुखारविंद वाला भाग नहीं दिखता, इतना ही दिखाई देता है। मैंने कहा, 'जितना दिखाई दे उतना वह पूरा ही है, ऐसा मानना।' कम-ज़्यादा भाग दिखाई दे, उसमें हर्ज नहीं है लेकिन दादा का मुखारविंद दिखाई देना चाहिए। कम-ज़्यादा कौन दिखाता है। बीच में बुद्धि दखल देती है। स्वप्न में वह बुद्धि नहीं होती तो अच्छी तरह से दिखाई देता है। स्वप्न में बुद्धि दखल नहीं होती। क्योंकि नींद में बुद्धि सो जाती है। इसलिए दखल नहीं। अभी जागते समय दखल होती है। स्वप्न में तो दादा 'एक्ज़ेक्ट' दिखते हैं। जिन्हें भजते हैं, उस रूप बनते जाते हैं।

दादा का निदिध्यासन करवाती है प्रज्ञा

प्रश्नकर्ता : आज सुबह सामायिक में हर जगह आपका ही निदिध्यासन होता रहा। वह क्या है? मैं उसे शुद्ध चित्त समझता हूँ।

दादाश्री : नहीं, वह सारा काम तो प्रज्ञाशक्ति का है। शुद्ध चित्त तो, स्वयं ही आत्मा है। शुद्धात्मा ही शुद्ध चिद्रूप (चित्त स्वरूप) है। यह सब तो प्रज्ञा करती है।

प्रश्नकर्ता : सभी जगह दादा बैठे हुए दिखाई देते हैं, वह क्या है?

दादाश्री : वही प्रज्ञा है न। अज्ञाशक्ति तो दूसरा ही दिखाती है। जो लक्ष्मी दिखाती है, स्त्रियाँ दिखाती है, वह अज्ञाशक्ति है। अज्ञाशक्ति स्त्री का निदिध्यासन करवाती है और प्रज्ञाशक्ति ज्ञानी पुरुष का। ज्ञानी पुरुष अर्थात् आत्मा का निदिध्यासन करवाती है।

प्रश्नकर्ता : अब, जिसने अभी ज्ञान लिया है, उसे भी स्त्री का निदिध्यासन हो जाता है तो क्या वह अज्ञा डिपार्टमेन्ट है?

दादाश्री : वह तो चंदूभाई का भाग है, उससे आपको क्या लेना-देना?

प्रश्नकर्ता : नहीं, तो फिर उसमें चित्त का फंक्शन कहाँ पर आया?

दादाश्री : वह तो चंदूभाई का भाग है, अशुद्ध चित्त है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर यह प्रज्ञा जो ज्ञानी पुरुष का निदिध्यासन करवाती है, उसमें चित्त का फंक्शन कहाँ आया?

दादाश्री : उसमें चित्त की ज़रूरत ही नहीं है। प्रज्ञाशक्ति खुद ही देख सकती है।

प्रश्नकर्ता : इसे एक्ज़ेक्ट फोटोग्राफी कहते हैं?

दादाश्री : हाँ, एक्ज़ेक्ट! फोटोग्राफी से भी अच्छा। फोटोग्राफी में इतना अच्छा नहीं आता। स्वप्न में तो फोटोग्राफी से भी ज़्यादा अच्छा दिखाई देता है। और स्वप्न में तो रूबरू से भी ज़्यादा अच्छा आता है।

प्रश्नकर्ता : चित्त का काम ही नहीं रहा?

दादाश्री : जो शुद्ध चित्त था, वह आत्मा में एक हो गया। आत्मा में मिल गया।

निदिध्यासन में दखल किसका?

प्रश्नकर्ता : तो निदिध्यासन को देखने वाला कौन है?

दादाश्री : वह प्रज्ञाशक्ति है।

प्रश्नकर्ता : वह खुद ही देखती है और खुद ही धारण करती है?

दादाश्री : वह खुद ही है सबकुछ। उसी की हैं सभी क्रियाएँ। चित्त की ज़रूरत ही नहीं रही वहाँ पर। जब तक अशुद्ध चित्त है तब तक सबकुछ संसार का ही दिखाई देता है उसे। अशुद्ध चित्त, शुद्ध की बातें नहीं देख सकता। अत: चित्त शुद्ध हुआ तो आत्मा में एक हो गया। आत्मा में मिल गया। रहा कौन? बीच में कोई नहीं रहा। प्रज्ञाशक्ति चलती रहती है बस। दखल हो तो वापस शुद्ध चित्त भी बिगड़ता जाता है फिर। अंधेरा हो न, तो वापस बिगड़ता जाता है। तो उसे वापस कहाँ रिपेयर करवाने जाएँ? उसके कारखाने तो कहीं भी नहीं होते। और प्रज्ञाशक्ति को हमें रिपेयर नहीं करना पड़ता। जो वस्तु नहीं है, अगर उसे रखा जाए तो रिपेयर करवाने जाना पड़ेगा। जो वस्तु नहीं है, उसे तो बिगड़ने पर रिपेयर करवाने जाना पड़ेगा। अत: बीच में किसी चीज़ की कोई ज़रूरत नहीं है। सभी क्रियाएँ प्रज्ञा करती हैं।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी पुरुष का निदिध्यासन रहता है, उसे आपने प्रज्ञा कहा है तो आप ऐसा भी कहते हैं न कि जितना अधिक निदिध्यासन रहेगा उतना ही चित्त शुद्ध होगा?

दादाश्री : चित्त शुद्धि तो हो चुकी है न!

प्रश्नकर्ता : जड़ से हो गई है संपूर्ण, तो वह जो अशुद्ध चित्त है, उसका क्या होता है?

दादाश्री : मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, अशुद्ध चित्त तो सभी सांसारिक कार्य कर लेता है। क्या शुद्ध चित्त की इसमें कभी दखल होती है? अशुद्ध चित्त हो तो दखल हो जाती है बीच में। शुद्ध चित्त हो तो दखल नहीं होती। यदि तीसरा व्यक्ति हो तभी दखल होती है। दखल होती है? आप निदिध्यासन करके आओ कभी।

प्रश्नकर्ता : निदिध्यासन करने में किसकी दखल रहती है?

दादाश्री : वे तो ये उदयकर्म हैं।

प्रश्नकर्ता : क्योंकि यदि प्रज्ञा का खुद का स्वतंत्र डिपार्टमेन्ट होता तो प्रज्ञा सभी महात्माओं

में उत्पन्न हुई है, उसके बावजूद भी अपने महात्माओं को ज्ञान के बाद में एक सरीखा...

दादाश्री : सभी को एक सरीखा ज्ञान उत्पन्न नहीं होता, हर एक के सामर्थ्य अनुसार होता है, फिर उसी अनुसार आज्ञा पालन हो पाता है।

प्रश्नकर्ता : यानी आपने सामर्थ्य अनुसार कहा, ऐसा क्यों?

दादाश्री : ऐसा ही है न! उसका निश्चय बल वगैरह ऐसा सब होना चाहिए न! अलग-अलग नहीं होता हर एक का? हर एक का अलग। तेरा अलग, उसका अलग, इन सब का अलग-अलग है न।

प्रश्नकर्ता : लेकिन आप ऐसा कहते हैं न कि चित्त तो सभी का पूर्णत: शुद्ध हो चुका है?

दादाश्री : हाँ, तभी तो आत्मा प्राप्त होता है न!

प्रश्नकर्ता : तो यदि शुद्ध चित्त पूर्णत: शुद्ध हुआ तो उतनी ही प्रज्ञा उत्पन्न होगी?

दादाश्री : हाँ। जब हम ज्ञान देते हैं तब आत्मा शुद्ध हो गया इसलिए प्रज्ञा उत्पन्न हो ही जाती है। फिर उसकी पाँच आज्ञा पालन करने की जो शक्ति है न, उसमें जितना जोड़-तोड़ (अनिश्चय) होता है उतना ही उसका लाभ कम होता जाता है!

प्रश्नकर्ता : अर्थात् जितना आज्ञा का पालन हो उतनी यह प्रज्ञाशक्ति खिलती जाती है?

दादाश्री : हाँ, वैसा निश्चय बल होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इसमें निश्चय बल किसका है?

दादाश्री : सबकुछ खुद का ही।

प्रश्नकर्ता : क्या ऐसा है, कि निश्चय खुद ही करता है और फिर खुद ही बलवान होता जाता है? वह समझ में नहीं आया।

दादाश्री : अशुद्ध चित्त और मन वगैरह ज़ोर करें तो निश्चय बल बंद हो जाता है। इस प्रकार जिसका (निश्चय बल) कम है, उसमें वे (अशुद्ध चित्त और मन वगैरह) ज़्यादा मज़बूत रहते हैं। दखल देते हैं न ये सब, वर्ना हम भले ही कितना भी एकांत करके ध्यान में बैठे हुए हों लेकिन बाहर लोग हो-हो करें तो? इसी प्रकार ये सब बाहर हो-हो-हो होता है न, तो जिसे ज़्यादा हो-हो-हो होता है, उसका ठिकाना नहीं पड़ता।

प्रश्नकर्ता : यह चीज़ बहुत करेक्ट है। बाहर की हो-हो कम हो जाए तो...

दादाश्री : हमारी यह बाहर की हो-हो नहीं है, तो है क्या कोई झंझट? जबकि आपको तो अगर तीन लोगों की हो-हो रहे तो भी घबराहट हो जाती है, 'मुझे ऐसा कर रहे हैं', ऐसा मुझे स्पर्श ही नहीं करता न! मैं इस प्रकार से बैठता हूँ, बाहर बैठता ही नहीं न! मुझे शौक नहीं है ऐसा। आपको अगर शौक है तो बाहर बैठकर तीन लोगों के साथ आप हो-हो करो, मैं तो अपने रूम (आत्मा) में बैठे-बैठे (नाटकीय रूप से) हो-हो करता रहता हूँ। इतने सारे लोग! इसका कब अंत आएगा?

प्रश्नकर्ता : आप खुद के रूम में इस तरह सिफत से सरक जाते हो, चले जाते हो अंदर।

दादाश्री : बैठा हुआ ही होता हूँ अंदर। बाहर निकलता ही नहीं हूँ। शायद कभी परछाई दिखाई दी हो तो आपको लगता है कि बाहर

निकले होंगे, वही भूल है। वास्तव में वह मैं नहीं होता हूँ।

दादा की प्रज्ञा की अनोखी शक्ति

प्रश्नकर्ता : हम दादाजी का स्मरण करते हैं और दादा हमारे घर पर आकर आशीर्वाद देते हैं, वह क्या है? वह फिनोमिना (घटना) क्या है? वह कौन सी प्रक्रिया है?

दादाश्री : वह सारा प्रज्ञा की प्रक्रिया में जाता है। मैं बाहर निकलूँ तो इन भाई के घर कौन जाएगा? आते हैं न आपके यहाँ सुबह पाँच बजे! वह हमेशा का है न! वे अमरीका वाले भी कहते हैं कि 'मेरे यहाँ आते हैं'। जाते हैं, वह बात तो सही है न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन वह कौन जाता है?

दादाश्री : लेकिन यह हकीकत है न कि जाते हैं!

प्रश्नकर्ता : लोगों को अनुभव होता है। यहाँ से जाते हैं या नहीं, वह मालूम नहीं है लेकिन उन्हें ऐसा लगता है, वह क्या है?

दादाश्री : वह सब तो शक्ति है न, प्रज्ञाशक्ति की ज़बरदस्त शक्ति!

प्रश्नकर्ता : हम याद करते हैं और दादा आ जाते हैं, तो उसमें आपका कुछ अंश आता है या संपूर्ण आता है?

दादाश्री : वह सारा प्रज्ञा का काम है। जो दादा याद आते हैं न, वे तो आत्मा के तौर पर एक ही स्वभावी हैं। आपका ही आत्मा दादा बनकर काम कर रहा है। अर्थात् यह चीज़ खुद के भाव पर आधारित है और फिर वे भाव प्रज्ञा के होने चाहिए। और कहते हैं कि, 'अज्ञानी लोगों को भी उनके गुरु दिखाई देते हैं', तो कहते हैं, वह चित्त की शुद्धता है!

प्रश्नकर्ता : तो 'आपकी' तरफ से प्रज्ञाशक्ति काम कर रही है? उन्हें जो अनुभव होता है कि दादा यहाँ पर आए थे, वह आपकी प्रज्ञाशक्ति की वजह से है या उनकी प्रज्ञाशक्ति की वजह से?

दादाश्री : यह जो प्रज्ञाशक्ति है, उसी में से जो 'जाने वाले' हैं, उन्हीं की प्रज्ञाशक्ति है।

प्रश्नकर्ता : 'जाने वाले' है यानी?

दादाश्री : उनके पास 'जो' आते हैं, 'उनकी' प्रज्ञाशक्ति।

प्रश्नकर्ता : 'उनके पास जो आते हैं', मूलत: वह ऐसी जो कल्पना करते हैं या उन्हें ऐसा आभास होता है तो वह उनका खुद का ही हुआ न? आपको तो जब बताया तभी पता चला कि आप वहाँ पर गए थे।

दादाश्री : वह तो, अगर उनके भाव होंगे तो मिल जाएगी। उस शक्ति को देर नहीं लगती। सामने वाले का भाव हो तो शक्ति पहुँच जाती है। यहाँ से अमरीका भी पहुँच जाती है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् यह जो आपकी प्रज्ञाशक्ति है, वह तो वीतराग भाव से है। इसलिए जो भाव करते हैं, खिंचकर उनके पास चली जाती है।

दादाश्री : खिंचकर चली जाती है। और क्या? जिनका भाव मज़बूत होता है, खिंचकर उनके पास चली जाती है।

प्रश्नकर्ता : याद करते ही हमें जो दादा भगवान के दर्शन होते हैं और रास्ता दिखाते हैं, वह किसी वैज्ञानिक प्रक्रिया के आधार पर है?

दादाश्री : वह स्वभाव से ही है सारा! उसमें

शुद्ध चेतन 'साइलेन्ट' होता है। यह लाइट 'साइलेन्ट' है। लाइट के आधार पर सब क्रियाएँ करता है या नहीं करता? 'लाइट' का फायदा मिलता है!

प्रश्नकर्ता : याद करते ही, 'दादा भगवान' हाज़िर हो जाते हैं। वह क्रिया शुद्ध चेतन के आधार पर होने वाली बाहर की क्रिया है?

दादाश्री : आधार नहीं, वह तो स्वाभाविक क्रिया है। भीतर सूक्ष्म शरीर का आकर्षण होना, वह स्वाभाविक क्रिया है।

स्थूल पार करके, सूक्ष्मतम में प्रवेश करो

प्रश्नकर्ता : आपकी गैरहाज़िरी में एकाग्रता इधर-उधर हो जाती है, तब क्या करें?

दादाश्री : जब तक दादा खुद हों तब तक वे स्थूल हैं। स्थूल में से सूक्ष्म में जाना चाहिए। स्थूल तो मिला, परंतु अब सूक्ष्म में जाना चाहिए और दादा हाज़िर नहीं हों तब तो सूक्ष्म का ही प्रयोग शुरू कर देना चाहिए और सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम में जाने का प्रयोग करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा क्यों है कि आपकी उपस्थिति में एक भी वृत्ति बिल्कुल ज़ोर नहीं मारती और जैसे ही आप जाएँगे तो बाद में ये चंदूभाई जैसे कि वहीं के वहीं, सब शुरू हो जाता है फिर रोज़ाना का क्रम?

दादाश्री : यदि हमारी सूक्ष्म उपस्थिति रख सको, तो ऐसा नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, सूक्ष्म उपस्थिति किस तरह से रखनी है?

दादाश्री : आँख मीचों और दादा दिखें। जहाँ देखों वहाँ दादा दिखाई दें। दादा दिखाई दें यानी आपकी जोखिमदारी नहीं।

स्थूल का फायदा मिलता है, परंतु फिर सूक्ष्म में जाना चाहिए। 'दादा भगवान को नमस्कार करता हूँ', ऐसा बोलने के बाद 'दादा' दिखने चाहिए, फोटो के बिना भी 'दादा' दिखने चाहिए।

सूक्ष्म से आगे के निदिध्यासन हैं अतीन्द्रिय

प्रश्नकर्ता : सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम निदिध्यासन में कोई अंतर है या नहीं? वह तो पूरा अतीन्द्रिय हुआ न?

दादाश्री : वह सारा तो अतीन्द्रिय ही है। अपना माल ही अतीन्द्रिय है।

प्रश्नकर्ता : तो उसी को अखंड जागृति कहते हैं?

दादाश्री : अखंड जागृति ही है यह। वह संपूर्ण रूप से प्रकाशमान हो जाए तब केवलज्ञान कहलाता है।

सामने की तरफ जो देखना था वह नहीं दिखाई देता, ये बीच में अंतराय आ जाते हैं। अपनी यह संसारी फिल्म आ जाती है बीच में। जब संसारी फिल्म नहीं हो न, तब टंकी खाली हो जाती है फिर और भी मज़ा आता है।

प्रश्नकर्ता : तो सामने की तरफ क्या देखना होता है?

दादाश्री : सामने की तरफ वास्तविक ज्ञेय हैं।

प्रश्नकर्ता : इसका मतलब?

दादाश्री : ये वास्तविक ज्ञेय नहीं हैं। ये तो अपने कर्म के उदय हैं सारे। जिसे वास्तविक ज्ञेय कहा जाता है, वह वास्तविक ज्ञेय में वहाँ दिखता है हमें!

प्रश्नकर्ता : वास्तविक ज्ञेय में क्या जाना जा सकता है?

दादाश्री : वह बाद में समझ में आएगा। अभी एकदम से जल्दबाज़ी नहीं करनी है।

भावना, 'सूक्ष्म दादा' को प्राप्त करने की

प्रश्नकर्ता : आपसे मिलने के बाद भाव तो हमेशा ऐसा ही रहता है कि दादा से मिलें, दादा से मिलें लेकिन संयोग नहीं मिल पाते तब क्या?

दादाश्री : उसका उपाय नहीं है। जो संयोग न मिलें, वह सब 'व्यवस्थित' है। भाव से संयोग उत्पन्न करने चाहिए। यों अंदर के भाव के संयोग, निदिध्यासन, वह सब करना चाहिए। ये बाहर वाले वे द्रव्य से संयोग कहे जाते हैं। उन्हें आँखें भी देख सकती हैं, कान सुन सकते हैं और यदि ये न हो पाए तो वह भाव से करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : भावना तो रखी है, कि आपके अलावा और कुछ भी नहीं चाहिए।

दादाश्री : वह ठीक है। अंदर चलेगा मेरे भाई, चलेगा। भावना चलेगी। भावनाओं का लाभ मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : तो फिर एक्ज़ेक्ट भावना क्या होनी चाहिए?

दादाश्री : सूक्ष्म दादा की।

प्रश्नकर्ता : तो फिर ऐसा हुआ कि अभी तक दादा देहधारी के रूप में ही माने जाते हैं?

दादाश्री : हाँ, इन आँखों से दिखाई देने वाले को ही दादा मानते हैं। बाकी मूल दादा भगवान अलग हैं। ये जो दिखाई देते हैं, वे दादा अलग हैं और फिर बीच का भाग, सूक्ष्म दादा हैं।

प्रश्नकर्ता : बीच का भाग वही ज्ञानी है? वे बीच वाले सूक्ष्म दादा, अर्थात् वह ज्ञानी पुरुष का पद है?

दादाश्री : हाँ, जिनका आप निदिध्यासन करते हैं।

प्रश्नकर्ता : जो भावना कही है, वह कौन सी भावना होनी चाहिए, जो आपने कहा सूक्ष्म दादा की?

दादाश्री : जब तक निदिध्यासन रहेगा, तब तक किसी तरह की परेशानी नहीं आएगी। इस स्थूल उपस्थिति को ढूँढोगे तो परेशानी होगी।

हज़ारों सालों तक रहेंगे सूक्ष्म दादा

प्रश्नकर्ता : और यदि इसी मूर्ति का (दादा का) निदिध्यासन रहेगा तो कोई परेशानी नहीं आएगी?

दादाश्री : फर्स्ट क्लास रहेगा, हाइ क्लास रहेगा। चलता-फिरता-बोलता हुआ, सबकुछ रहेगा। अभी कितने ही लोग इसमें रहते होंगे! अमरीका में भी रोज़ मिलते रहते हैं, कहते हैं न सभी, 'आपके दर्शन होते हैं और हमारा दिन सुधर जाता है'। इस तरह जब हम नहीं होंगे तब भी सूक्ष्म दादा हज़ारों सालों तक चलेंगे।

प्रश्नकर्ता : मूर्ति का निदिध्यासन सूक्ष्म दादा माना जाएगा?

दादाश्री : जो निदिध्यासन होता है, वह? हाँ, वे सूक्ष्म दादा माने जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : और क्या-क्या आता है उसमें।

दादाश्री : चलते-फिरते, पढ़ते हुए-बोलते हुए...

प्रश्नकर्ता : वह सब तो ये सारी दैहिक क्रियाएँ दिखाई देती हैं।

दादाश्री : वे दिखाई देती हैं इतना ही नहीं, खुद के साथ ही हैं, ऐसा लगता है। बातें करते हुए भी दिखाई देते हैं। वह हमेशा के लिए टिकेगा, यह स्थूल नहीं टिकेगा। ये तो श्वास-उच्छवास वाले हैं। उसमें श्वास-उच्छवास नहीं होते।

आपको सूक्ष्म रूप में दादा के साथ निदिध्यासन रखना चाहिए। टिकिट बगैर के दादा और टिकिट वाले दादा, दोनों में फर्क हैं। टिकिट बगैर के दादा को आप अमरीका साथ ले जा सकते हैं, टिकिट वाले यहाँ रहेंगे। यहाँ सब के साथ सत्संग करेंगे न।

प्रश्नकर्ता : दादा के सत्संग का, वाणी का निदिध्यासन रहता है, वह? ज्ञानवाणी का चिंतवन रहता हो, उससे क्या होता है?

दादाश्री : वह भी निदिध्यासन में ही आएगा। दादा का किसी भी प्रकार का चिंतवन हो, वह निदिध्यासन में आएगा। वे स्थूल रूप से हाज़िर नहीं होंगे तब भी हज़ारों सालों तक हो सकेगा।

कविराज लिखते हैं न कि,
'कंठे विराजो हे दादा,
बुलवाओ सुलटी भाषा।'

हे दादा! कंठ में विराजिए। ताकि वाणी सुधर जाए। यहाँ गले में दादा का निदिध्यासन करें तो भी वाणी सुधर जाएगी।

सूक्ष्म दादा ले जाते हैं निरालंब की ओर

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है न, इस स्थूल के बाद सूक्ष्म दादा और तीसरा कहा है न?

दादाश्री : भगवान।

प्रश्नकर्ता : उनसे कनेक्शन किस तरह से रखा जा सकता है?

दादाश्री : भगवान का चिंतवन किस प्रकार से हो सकेगा? वे तो निरंजन-निराकार हैं। कष्ट उठाकर किस प्रकार से हो सकेगा?

प्रश्नकर्ता : वह कनेक्शन किस तरह से सेट कर सकते हैं?

दादाश्री : वह तो अंदर से जब सारा कचरा माल निकल जाएगा, उसके बाद फिर दर्शन में आएँगे। हम नहीं कहते कि हमें दिखाई देते हैं, निरालंब। जिन्हें कोई भी अवलंबन नहीं लेना पड़ता। मूल स्वरूप दिखाई देना, मूल स्वरूप की तादृश्यता, जिसे केवलज्ञान स्वरूप कहा गया है, वह। समझपूर्वक दिखता रहता है और दूसरा ज्ञानपूर्वक दिखाई देता है।

प्रश्नकर्ता : निरालंब स्वरूप आपको दिखाई देता है, ऐसा न?

दादाश्री : हाँ। निरंतर, सब से अंतिम स्वरूप। निरालंब!

प्रश्नकर्ता : हमें खुद को दिखाई दे ऐसा होना चाहिए?

दादाश्री : हाँ, आपको यह शब्द का अवलंबन दिया है, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' शब्द के अवलंबन से शुद्धात्मा हो गया और वह अनुभूति हुई, यों मोक्ष के दरवाज़े में घुस गए। उन्हें कोई वापस नहीं निकाल सकता। अगर जान-बूझकर कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं करे तो। अंदर जाकर यदि लड़ाई-झगड़ा करेगा तो वापस निकाल देंगे। वह ठीक से रहे तो हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : इस शब्द के अवलंबन के बाद सूक्ष्म दादा से कितनी हेल्प मिलती है?

दादाश्री : उस तरफ ले जाएँगे। निरालंब में ले जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : यह दैहिक निदिध्यासन निरालंब में ले जाएगा?

दादाश्री : उन्होंने जो देखा है, वहाँ तक ले जाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इसमें दैहिक निदिध्यासन ज़्यादा हेल्प करता है या वाणी का निदिध्यासन ज़्यादा हेल्प करता है?

दादाश्री : सभी मिलकर हेल्प करेंगे। हाँ, इन्होंने जहाँ तक देखा है, वहाँ तक ले जाएगा।

प्रश्नकर्ता : आपको 'निरालंब दादा भगवान' अर्थात् जो मूल स्वरूप दिखाई दिया, वह स्वरूप कैसा है?

दादाश्री : यहाँ पर है नहीं कोई, किस आधार पर पहचान कराएँ?

प्रश्नकर्ता : क्या वह केवलज्ञान स्वरूप कहलाता है?

दादाश्री : लेकिन समझ रूपी, ज्ञान रूपी नहीं, एब्सल्यूट, जिसमें कोई मिक्सचर नहीं है, उस स्वरूप में। आपका तो मिक्सचर वाला है। शुद्धात्मा की बोतल के साथ, ढक्कन के साथ। आत्मा बोतल है। शुद्ध उसका ढक्कन है। वर्ना, आपका तो सब बह जाएगा।

हमेशा के दादा को ढूँढ निकालना

प्रश्नकर्ता : ये स्थूल दादा चले जाएँगे, तब हम क्या करेंगे? इसका दादा क्या जवाब दे रहे हैं?

दादाश्री : हाँ, हमें तो हमेशा के (शाश्वत) दादा को खोज निकालना है। ये दादा तो छिहत्तर साल के हैं। कब देह छूटे और लुढक पड़ें, इनका क्या भरोसा? इसके बजाय आपने हमेशा के दादा ढूँढ निकाले हों तो फिर कोई उलझन रही? फिर रहे तो भले ही सौ साल जिएँ हमें हर्ज नहीं है। लेकिन आपको अपना ढूँढकर बैठना चाहिए।

पाँच आज्ञा का पालन करता हो तो वह हमारी प्रत्यक्ष हाज़िरी है! प्रत्यक्षपन सूचित करता है यह। हमें पाँच आज्ञा देकर गए हैं, फिर हमें क्या? वे खुद ही हैं न!

ये पाँच आज्ञा किसी भी जगह और किसी भी समय पर सर्व समाधान दें, ऐसी हैं। इसलिए ये होंगी तो समाधान रहेगा। मतलब यह सेफसाइड है आपकी, कम्प्लीट सेफसाइड!

प्रश्नकर्ता : आप तो दादा, आपके पास आने वाले को कितना अधिक निरालंब बना देते हैं!

दादाश्री : वर्ना फिर क्या करें? हिम्मत तो रखनी चाहिए न! आपको स्थिर रहना चाहिए न! यानी आप बैठने की पटरी पर बैठना। आज्ञा पालन की, कि बैठने की पटरी मिल गई, बस।

हमारी आज्ञा, वे 'हम' ही हैं, 'खुद' ही हैं। हमारी पाँच आज्ञा में रहने का प्रयत्न करो।

'अभेद दादा' भूलाते नहीं

यह 'अक्रम विज्ञान' है। यह एक अवतारी 'ज्ञान' है। और यदि इस 'ज्ञान' की आराधना हमारी आज्ञापूर्वक की जाए न तो निरंतर समाधि रहेगी! आप डॉक्टर का व्यवसाय करो तो भी अंदर निरंतर समाधि रहेगी। कुछ भी बाधक होगा ही नहीं और स्पर्श भी नहीं करेगा। यह तो बहुत उच्चतम विज्ञान है! इसलिए कविराज कहते हैं कि

'दस लाख वर्षों में ऐसा नहीं हुआ है, वैसा यह हुआ है।'

प्रश्नकर्ता : शरणागति की आवश्यकता है, ऐसा?

दादाश्री : नहीं। यहाँ पर शरणागति जैसी कोई चीज़ ही नहीं है। यहाँ पर तो अभेदभाव है। मुझे आप में से किसी के प्रति जुदाई लगती ही नहीं और इस दुनिया के प्रति भी बिल्कुल जुदाई नहीं लगती।

प्रश्नकर्ता : आप तो बहुत उच्चतम कोटि के हैं, हम तो बहुत निम्न कोटि के हैं।

दादाश्री : नहीं! ऐसा नहीं है। आप तो मेरी कोटि के ही हो। आप मुझे देखते ही रहो। उससे मेरे रूप होते रहोगे। दूसरा कोई रास्ता नहीं है। जिसे आप देखते हो, उसी रूप होते जाते हो।

अपने यहाँ हज़ारों लोग ऐसे होंगे कि यदि आप उनसे जाकर पूछो कि आपको दादा याद आते हैं?' तो वे कहेंगे, 'चौबीस घंटों में से एक सेकन्ड भी 'दादा' भुलाए नहीं गए! कोई भी दिन ऐसा नहीं गया कि हम दादा को एक सेकन्ड के लिए भी भूले हों!' और नहीं भूलते तो, फिर वहाँ उन्हें दु:ख होता ही नहीं है। जब दादा को भूलते ही नहीं तो फिर जगत् विस्मृत ही रहा करेगा न! एक की स्मृति तो दूसरे की विस्मृति। दादा की स्मृति तो जगत् की विस्मृति। कुछ लोग दादा की भक्ति में लीन हो जाते हैं। दादा को निरंतर याद करके भक्ति में लीन हो जाते हैं और अन्य कुछ लोग ज्ञान में रहने वाले और उसमें से भी फिर पूर्ण रूप से आज्ञा में रहने वाले कुछ ही लोग हैं। फिर भी सभी का एक जन्म, दो जन्म, या फिर पाँच जन्म होकर भी हल आ ही जाएगा। और वे जो भक्ति में लीन हैं उनका भी हल तो आएगा क्योंकि बाकी परेशानियाँ मिट गई न! आप इस दशा की भक्ति करते हों तो आप भी ऐसे बन जाओगे। जिसको भजते हैं उसको पूर्ण रूप से प्राप्त करते हैं।

ज्ञानी का निदिध्यासन ही है स्व-परिणति

प्रश्नकर्ता : हम सभी को दादा का अवलंबन है, उसका क्या?

दादाश्री : आपको दादा का जो अवलंबन है न, वह इन दादा का नहीं है। यानी कि वह आपका ही आत्मा है। इसलिए कृपालुदेव ने कहा है न, कि, 'जब तक आपने यथार्थ आत्मा नहीं देखा है, यथार्थ अर्थात् प्रतीति है, श्रद्धा में है लेकिन जब तक यथार्थता उत्पन्न नहीं होती तब तक ज्ञानी पुरुष, वे खुद का ही आत्मा हैं।' इसे अवलंबन नहीं कहा जाता। इसलिए हम कहते हैं न कि, 'अरे! दादा, दादा करना न, आपका काम हो जाएगा।' यह इस काल का आश्चर्य है! ग्यारहवाँ आश्चर्य!

'दादा भगवान', यह स्व-परिणति करने का ज्ञान है! और अभी यदि कोई अन्य भगवान हो तो पर-परिणति उत्पन्न होती। ये दादा भगवान तो हम किन्हें कहते हैं? भीतर जो प्रकट हुए हैं, उन्हें कहते हैं। अत: यही मुख्य वस्तु है, यह स्व-परिणति है।

'दादा भगवान' साधन नहीं हैं, आलंबन नहीं हैं, खुद का ही स्वरूप हैं। आपका स्वरूप ही 'दादा भगवान' हैं। यदि आलंबन हो तब तो पर-परिणति खड़ी ही है। यह आलंबन नहीं है, इसलिए यह स्व-परिणति है। कभी-कभार ही ऐसा

होता है। तीर्थंकरों के लिए सही है। क्योंकि उनमें अहंकार नहीं है न! और क्रमिक मार्ग के ज्ञानी में तो अहंकार रहता है इसलिए पर-परिणति रहती है। उनका वह अवलंबन और निदिध्यासन, वह पर-परिणति कहलाती है और यह स्व-परिणामी चीज़ है।

प्रश्नकर्ता : 'ज्ञानी पुरुष ही आपका आत्मा हैं', ऐसा कहते हैं, तो उनका निरंतर निदिध्यासन रहने पर वह स्व-परिणति कहलाएगी?

दादाश्री : हाँ, वह स्व-परिणति कहलाती है।

दादा याद रहें न, तो वह आत्मरमणता कहलाती है। ज्ञानी पुरुष वे खुद का आत्मा है। यानी कि मूल आत्मा को पकड़ने में तो अभी देर लगेगी उसे लेकिन ज्ञानी पुरुष की रमणता करें न, यों आँखों के सामने दिखें चलते-फिरते, तो फिर और क्या चाहिए? इससे ज़्यादा क्या चाहिए?

इन 'दादा' का निदिध्यासन करें न, तो उनमें जो गुण हैं न, वे उत्पन्न होते हैं अपने में।

ज्ञानी पुरुष का निदिध्यासन, वह है स्पष्टवेदन

जब तक आत्मा का स्पष्टवेदन नहीं है तब तक ज्ञानी पुरुष का निदिध्यासन, वह स्पष्टवेदन है।

कृपालुदेव ने क्या कहा कि, 'ज्ञानी पुरुष या सद्गुरु, वे ही अपना आत्मा हैं।' कब तक कि जब तक आपको स्पष्टवेदन नहीं हुआ, भीतर अस्पष्टवेदन है। सुख उत्पन्न होता है लेकिन कैसे, कहाँ से होता है और क्या होता है, वह जब तक अस्पष्ट है, तब तक ज्ञानी पुरुष आपका आत्मा हैं और भीतर स्पष्ट उत्पन्न हुआ, तो आप मुक्त हो गए। फिर स्वतंत्र हो गए। जब तक अस्पष्ट है तब तक ज्ञानी पुरुष का अवलंबन है। वे खुद का शुद्धात्मा हैं, खुद का ही आत्मा हैं। वे जैसा कहें, उसी तरह करना है, तो फिर सभी आगमों का भेद, सभी शास्त्रों का भेद खुद को प्राप्त हो जाएगा।

कृपालुदेव ने कहा है, कि 'आत्मा तो ज्ञानी के हृदय में है।' किताबों में स्थूल आत्मा है। वह स्थूल आत्मा काम में नहीं आएगा, सूक्ष्मतम आत्मा होना चाहिए। जिसे केवलज्ञान कहा जाता है वह चाहिए। उस सूक्ष्मतर तक तो पहुँचना चाहिए न? हम सूक्ष्मतर तक पहुँचे हैं, ऐसा यह विज्ञान है! अब सूक्ष्मतम में जाना बाकी है।

दादा का निदिध्यासन काम निकाल देगा

कृपालुदेव ने कहा है कि, 'ज्ञानी पुरुष वे खुद का आत्मा हैं।' इसलिए उनके निदिध्यासन से उस रूप बनते हैं। क्या होता है?

प्रश्नकर्ता : निदिध्यासन से उस रूप बनते हैं।

दादाश्री : निदिध्यासन ज़्यादा फल देता है। सब से ज़्यादा निदिध्यासन, ये जो दिखाई देते हैं न, वे तो बहुत फल देते हैं।

तुझे दादा याद आते रहते हैं क्या?

प्रश्नकर्ता : निदिध्यासन तो अब रहता ही है। चौबीस घंटे रहता है, दादा।

दादाश्री : चौबीस घंटे? तो दो घंटे कम कर देना था न!

प्रश्नकर्ता : रात में कभी-कभी अन्य स्वप्न आ जाते हों और दादा नहीं रह पाते हों, तो पता नहीं। वर्ना, जागते समय तो रहते ही हैं।

दादाश्री : अब चौबीस घंटे रहते हैं, तो फिर आपको निदिध्यासन कितने घंटे रहता है?

प्रश्नकर्ता : मुझे तो दादा ही याद रहते हैं। अब, भगवान भी याद नहीं आते।

दादाश्री : ऐसा! तब तो बहुत अच्छा है! दादा जैसा लाभदायक तो कुछ भी नहीं है। यह तो वर्ल्ड का आश्चर्य हैं! किसी दिन, किसी काल में जो होता नहीं, ऐसी वस्तु हुई है। उसमें भी यदि पुण्यशाली हो तो काम निकल जाएगा।

वीतरागी दादा के निदिध्यासन से होता है कल्याण

प्रश्नकर्ता : आप्तवाणी पढ़ते-पढ़ते 'दादा' दिखते हैं!

दादाश्री : हाँ... 'दादा' दिखते हैं। एक्ज़ेक्ट 'दादा' दिखते हैं। जहाँ इच्छा करे, वहाँ 'दादा' दिखे ऐसे हैं और अपना फल मिले ऐसा है। ये 'दादा' नहीं हैं, ये दिखते हैं वे तो भादरण के पटेल हैं। ये बोलते हैं वे भी 'दादा' नहीं है, वह तो 'टेपरिकॉर्ड' बोलती है। 'दादा' वे 'दादा' हैं! जो वीतराग हैं, चौदह लोकों के नाथ हैं!! जिन्हें 'हम' भी भजते हैं। जो भीतर वीतराग बैठे हैं, वे 'दादा' हैं। ये तो भीतर प्रकट हो गए हैं! कितने ही लोगों का कल्याण हो जाएगा। हाथ से स्पर्श करेंगे न, उसका कल्याण हो जाएगा! यह तो 'अक्रम विज्ञान' है।

जीवंत 'ज्ञानी पुरुष' के ध्यान को निदिध्यासन कहते हैं। चित्तवृत्ति निर्मल करने का सब से छोटा उपाय अर्थात् कम से कम निस्पृही व्यक्तियों का संग और सब से अंतिम, संपूर्ण निर्मल करने का उपाय अर्थात् वीतराग का निदिध्यासन! चित्तवृत्ति निर्मल हो जाए तो 'ज्ञानी पुरुष' याद आते रहते हैं!

ज्ञानी पुरुष के निदिध्यासन से निरालंब दशा

'दादा' का अवलंबन ले न, तो वह जो निरालंब दशा है, वह दशा हमें निरालंब बनाती है इसलिए हम कहते हैं न, कि 'दादा का अवलंबन लो।' 'शुद्धात्मा', वह निरालंब नहीं है, वह तो आपको हेल्पिंग (सहायक) है। अत: और कुछ नहीं आए और सिर्फ 'दादा' का निदिध्यासन किया जाए न, तो उसमें सबकुछ आ जाएगा। बाकी तो, अभी इंसान कितना करेगा!

जिसे दादा का निदिध्यासन रहता है, उसके तो सभी ताले खुल जाते हैं। दादा के साथ अभेदता, वही निदिध्यासन है! बहुत पुण्य होता है, तब ऐसा उदय आता है और 'ज्ञानी' के निदिध्यासन का साक्षात् फल मिलता है। वह निदिध्यासन, खुद की शक्ति को उसी अनुसार कर देता है, उसी रूप बना देता है। क्योंकि 'ज्ञानी' का स्वरूप अचिंत्य चिंतामणी है इसलिए उसी रूप बना देता है। 'ज्ञानी' का निदिध्यासन निरालंब बनाता है। फिर 'आज सत्संग नहीं हुआ, आज दर्शन नहीं हुए।' उसे ऐसा कुछ भी नहीं रहता। ज्ञान स्वयं निरालंब है, ऐसा स्वयं निरालंब हो जाना पड़ेगा, 'ज्ञानी' के निदिध्यासन से।

'ज्ञानी पुरुष' का निदिध्यासन ही साधन है और उससे ही आत्मा प्रकट होता रहता है। जैसी 'बिलीफ' होगी वैसे साधन मिल आते हैं। 'स्व' की 'बिलीफ' होने के बाद उसका ज्ञान होने के लिए एक ही साधन है - 'ज्ञानी पुरुष'!

जिसका निदिध्यासन करते हैं, वैसा आत्मा हो जाता है। जिसका निदिध्यासन करे, उस रूप हो जाते हैं। निदिध्यासन तो सिर्फ, ज्ञानी का करने जैसा है। उससे उनकी सारी शक्तियाँ खुद में प्रकट हो जाती हैं। अन्य कुछ करने जैसा नहीं है।

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्यश्री दीपकभाई के सत्संग कार्यक्रम - लाइव वेबकास्ट द्वारा इन्टरनेट से

दिसम्बर पारायण (आप्तवाणी-14 भाग-2 और भाग-3)

25 दिसम्बर से 1 जनवरी सुबह 10 से 12-30 **पारायण - वाचन तथा प्रश्नोत्तरी**
शाम 4-30 से 7 **पारायण - वाचन तथा प्रश्नोत्तरी**

नोट : आप्तवाणी-14 भाग-2 गुजराती किताब के पेज नंबर 346 से वाचन होगा।

2 जनवरी - परम पूज्य दादाश्री की पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम

जूनागढ त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में...

दिनांक 7 से 9 जनवरी 2022

7 जनवरी (शुक्र) शाम 4-30 से 7-30 - **सत्संग** (स्थानिक महात्माओं और नए मुमुक्षुओं के लिए)

8 जनवरी (शनि) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

9 जनवरी (रवि) **प्राणप्रतिष्ठा :** सुबह 9-30 से 1 तथा **प्रक्षाल-पूजन-दर्शन-आरती :** शाम 4 से 7

स्थल : दादा भगवान त्रिमंदिर, खामध्रोल चोकडी, जूनागढ बाइपास रोड, जूनागढ. **संपर्क :** 9924344489

विशेष सूचना : प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल एक दिन का है, इसलिए रात्रि आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाएगी। जो महात्मा-मुमुक्षु उसी दिन सीधे ही महोत्सव स्थल पर पहुँचेंगे, उनके लिए बाथरूम-टोइलेट की सुविधा स्थल पर रहेगी।

[उपरोक्त कार्यक्रमों में समय-संजोग के आधीन परिवर्तन हो सकता है।]

'दादावाणी' के सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** (079) 27540408, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

પૂજ્ય નીરુમા / પૂજ્ય દીપકભાઈને નિહાળો ટીવી ચેનલ પર

ભારત

- **'દૂરદર્શન ગિરનાર'** પર દરરોજ સવારે ૭-૩૦ થી ૮-૩૦, રાત્રે ૬ થી ૧૦
- **'અરિહંત'** ચેનલ પર દરરોજ સવારે ૨-૫૦ થી ૩-૫૦, બપોરે ૨-૩૦ થી ૩, રાત્રે ૮ થી ૯
- **'વાલમ'** પર દરરોજ સાંજે ૬ થી ૬-૩૦ **(ફક્ત ગુજરાત રાજ્યમાં)**
- **'સ્વરશ્રી'** પર દરરોજ સાંજે ૬ થી ૬-૩૦ **(ફક્ત ગુજરાત રાજ્યમાં)**
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज सुबह 7-30 से 8, रात 8-30 से 9-30 **(हिन्दी में)**
- **'साधना'** पर हर रोज सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 **(हिन्दी में)**
- **'उड़ीसा प्लस'** पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 **(हिन्दी में - केवल उड़ीसा राज्य में)**
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 **(मराठी में)**
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर हर रोज दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 **(कन्नड़ा में)**

USA - Canada

- **'TV Asia'**- પર દરરોજ સવારે ૭-૩૦ થી ૮ EST

U K

- **'વીનસ' ટીવી** पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 GMT (हिन्दी में)
- **'વીનસ'** ટીવી પર દરરોજ સવારે ૮-૩૦ થી ૯ GMT
- **'MA TV'** પર દરરોજ સાંજે ૫-૩૦ થી ૬-૩૦ GMT

Australia

- **'Rishtey'** पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji - NZ - Singapore - SA - UAE

- **'Rishtey-Asia'** पर हर रोज सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में)

USA - UK - Africa - Australia

- **'આસ્થા ગ્લોબલ'** પર સોમ થી શુક્ર રાત્રે ૧૦ થી ૧૦-૩૦
  (ડિશ ટીવી ચેનલ **UK**-૮૪૯, **USA**-૭૧૯) (ગુજરાતી અને હિન્દીમાં)

नवम्बर 2021
वर्ष-17 अंक-1
अखंड क्रमांक - 193

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

'ज्ञानी' का निदिध्यासन ही है अंतिम भक्ति

जिनका निदिध्यासन करे, उसी रूप हो जाता है। कोई ग्रेज्युएट हो और यदि वह खेत में जाकर बैल ही चलाए तो बैल जैसा हो जाएगा, क्योंकि उसी का निदिध्यासन रहता है। इसलिए जिसकी संगत में रहे और उसका निदिध्यासन रहे, तो उसी रूप हो जाता है। दादा निरंतर याद रहते हैं, वह निदिध्यासन कहलाता है। निदिध्यासन से खुद को उनकी सारी शक्तियाँ प्राप्त होती हैं। इस श्रवण और मनन से निदिध्यासन बढ़ता जाता है। 'ज्ञानी' का निदिध्यासन ही 'मैं शुद्धात्मा हूँ' रूपी अंतिम भक्ति है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.